ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

cky vf/kdkj rRijrk rFkk vfHker ekiuh dk fuekZ.k

जयंत पाल सिंह, Ph. D. & शिरीष पाल सिंह, Ph. D.

[1]टी.जी.टी सर्वोदय बाल विद्यालय, सी ब्लॉक दिलसाद गार्डन दिल्ली .95

[2](पत्राचार लेखक) सह प्रोफेसर, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), वर्धा - 442001, महाराष्ट्र

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

तत्परता, के मापन के लिए अनुसंधायक ने स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया है। यहाँ पर हम इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहें है। किसी कार्य को स्वेच्छापूर्वक करने के लिए तैयार रहना तत्परता कहलाती है। लगातार विस्तृत अध्ययन एवं शिक्षण कार्यों के साथ जुडे हुए, अध्यापकीय कार्यों के अनुभवों एवं अध्यापक कक्षों की दार्शनिक, गर्म तथा ठण्डी बहसों के आधार पर अनुसंधायक ने जिन तत्परताओं को अनुसंधान में समाविष्ट करने के लिए चुना है उनकी वर्तमान संख्या 20 है। प्रारम्भ में इनकी संख्या 30 थीं। अनुभवी अध्यापकों, शिक्षक–अग्रसारक, शैक्षिक अनुसंधायकों के साथ वार्ता के आधार पर 30 में से 20 का चयन अनुसंधान के लिए उपयोगिता के आधार पर किया गया । अनुसंधान की दृष्टि से प्रत्येक कथन के तीन विकल्पों में से एक का चयन करने का निवेदन किया ताकि अध्यापकों की इन कार्यों के प्रति तत्परता का अध्ययन किया जा सके। इन कथनों के विभिन्न क्षेत्रों का निर्धारण शिक्षा के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रख कर किया गया तथा अति महत्वपूर्ण माने जाने वाले क्षेत्रों के कथनों की संख्या का निर्धारण भी महत्व के आधार पर करने का निर्णय लिया गया। अन्तिम निर्णय का कार्य अनुसंधायक ने अपनी गुरुवर तथा अनुभवी अध्यापकों, अनुसंधायकों तथा शैक्षिक अनुसंधान निष्णातों के सुझावों के आधार पर किया गया है। तत्परता मापनी में कथनों के क्षेत्रों तथा कथनों की क्रम संख्या को सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है।

lkj.kh &1 rRijrk lEcU/kh dFkuk d {k= rFkk mudh Øe l[;k

Øe	{k=	dFkuk dk Øekd	dy l[;k
1	साक्षरता	6	1
2	परीक्षाफल	12, 13	2
3	पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं	11, 14, 15, 19	4
4	शिक्षा में पारदर्शिता	16,17,18	3
5	बच्चों का स्वास्थ्य	1,2,3,4,5	5
6	अध्यापक–प्रशिक्षण	8,9,10,	3
7	बच्चों को प्रोत्साहन	7	1
8	अध्यापकों को पुरस्कार	20	1
	leLr		20

vfHkerkoyh dk fuek.k

अभिमत पर्यावरण के किसी पहलू के प्रति व्यक्ति के विचार की अभिव्यक्ति अभिमत होती है। इसमें तथा अभिवृत्ति में यह अन्तर होता है कि अभिमत में पूर्व प्रवृत्ति की निरन्तरता होना आवश्यक नहीं है जबकि अभिवृत्ति में पूर्व प्रवृत्ति की निरन्तरता होती है। अभिमतों में परिवर्तन होता रहता है। ये स्थाई नहीं होते।

1. हमारी अभिमतावली में सम्मिलित कथनों का चयन निरन्तर अध्ययन, अध्यापकों, अनुसंधायकों, विषय–विशेषज्ञों के सुझावों का परिणाम है। हमारी अभिमतावली में 1 से 19 तक के कथन बाल–अधिकारों के विभिन्न क्षेत्रों से हैं तथा 20 से 40 तक के सामाजिक मुद्दे विभिन्न बाल–अधिकारों से सम्बन्धित हैं। एक से 19 तक के कथनों पर (केवल कथन क्रमांक 3 को छोड कर) सभी में तीन विकल्पों में सें एक का चयन करके अपना अभिमत व्यक्त करना है। बालाधिकार से सम्बन्धित कथन संख्या 20 से 40 तक सामाजिक मुद्दों पर वरीयता प्रदान करके मतों की अभिव्यक्ति करनी है। इसमें तीन सामाजिक मुद्दे सम्मिलित हैं वे हैं– 1- लिंगानुपात का कम होना 2- बाल मृत्यु दर के कारण तथा 3- बच्चों के साथ सामाजिक–न्याय अर्थात् सामाजिक अन्याय से पीडित बच्चों को वरीयता क्रम प्रदान करना।

विभिन्न क्षेत्रों के कथनों को सारणी 2 में प्रस्तुत किया गया है।

lkj.kh &2 vfHkerkoyh e lfEefyr dFkuk d {k=

Øe	{k=	dFku Øekd	dy l[;k
1	प्रतिभा" ाली बालक	1	1
2	f" ाक्षा में असफलता का कारण	15	1
3	बाल श्रमिक	8	1
4	बालिकाएँ एवं लिगांनुपात	10, 11 , 18, 19 20 21 22 23 24 25	10
5	लोकतंत्र	17	1
6	पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं	12,16	2
8	समता तथा समानता	33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40	8
9	विकलांग बालक	4,6,7,9	4
10	कि" ाोर अपराध	14	1
11	उपेक्षित बच्चे	5	1
12	पुस्तकालय	13	1
		योग	40

fufer midj.kk dh o/krk

जब उपकरण अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में समर्थ होता है तो उस उपकरण को वैध परीक्षण कहते है और परीक्षण का यह गुण वैधता कहलाता है। वैधता किसी उपकरण की आवश्यक विशेषता होती है। गैरट (1981) के अनुसार किसी परीक्षण या किसी मापन उपकरण की वैधता उस पर निर्भर करती है, जिससे उस तथ्य को मापना है जिसके लिए उसे बनाया गया हैं।

rRijrk ijh{k.k dh o/krk %

अपने तत्परता सम्बन्धी उपकरण को अनुसंधायक ने वैध बनने का हर सम्भव प्रयास किया है। उपकरण को वैध बनाने के लिए गहन अध्ययन के बाद कथनों का निर्माण किया गया है। अध्यापकों, विषय विशेषज्ञों, अनुसंधायकों की सलाह के आधार पर वे परिस्थितियां चुनी हैं जिन्हें बाल अधिकारों के सम्बन्ध में अध्यापकों से जानना आवश्यक था।

midj.kk dh foHkndrk %

rRijrk dFkuk e foHkndrk % तत्परता सम्बन्धी विभेदकता देखने के लिए हमें अध्याय 4 में प्रस्तुत तत्परता सम्बन्धी उत्तरों को देखने से विदित होता है कि अध्यापकों के उत्तरों

में विभेद की स्थिति है समस्त अध्यापकों, लिंग के आधार पर, परिवेश के आधार पर, तथा जातीय वर्गो के आधार पर गणना किए गए काई–वर्गों का मूल्य 0.05 से उच्च स्तर पर सार्थक है। तीनों प्रत्यूत्तर श्रेणियों में एक जैसी प्रतिशत नहीं आई है। अध्यापकों की बहुमत तत्परता सभी कथनों पर स्पष्ट रूप में परिलक्षित हो रही जिससे तत्परता के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्णय लिया जा सकता है। इससे प्रकट होता है कि तत्परता मापनी विभेदक है।

vfHker lEcU/kh dFkuksa esa foHkkndrk % अभिमत सम्बन्धित समस्त कथनों 1 से 19 तक में तथा क्रम निर्धारण सम्बन्धी समस्त विचारों पर अध्यापकों के अभिमतों के अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि इन सभी में अध्यापक अपनी विचारधारा के अनुकूल अभिमत प्रकट कर रहे हैं। अध्यापकों के विभिन्न वर्गों लिंग, जातीयता, परिवेश आदि के आधार पर सार्थक स्तर (.05) का विभेद भी परिलक्षित हो रहा है। उपकरण की वैधता से सम्बन्धित जो गुण हमारे इस परीक्षण में आए है वे इस प्रकार है।

1. O;kidrk % इस परीक्षण में कथनों की संख्या 20 है जो कि बाल अधिकारों के 8 क्षेत्रों से हैं । इस क्षेत्रों का विवरण सारणी 3.6 में दिया गया है । बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की तत्परता के लिए अवश्यक समस्त क्षेत्रों को समाविष्ट किया गया तथा इन क्षेत्रों में कथनों को पर्याप्त भार प्रदान करने का प्रयास किया गया है ।

2. dFkuksa dh o/krk : इस क्षेत्र में सम्मिलित किए गये कथनों की विशेषताएं इस प्रकार है – 1. भाषा सरल तथा सुग्राहय है । 2. कोई भी कथन द्विअर्थक नहीं है । 3. कथन स्पष्ट है । 4. कथनों में अनिश्चितता नहीं हैं। 5.कथनों को प्रकाशन से पूर्व वास्तविक जनसंख्या पर जांचा तथा परखा गया है। 6. कथनों को शिक्षाविदों, अनुभवी अध्यापकों, अनुसंधायकों, विशेषज्ञों, शिक्षक प्रशिक्षकों के सुझावों के आधार पर सुधारा गया है। 7. प्रकाशन की त्रुटियों नहीं है।

vfHker lEcU/kh dFkuksa dh o/krk % व्यापक अध्ययन के आधार पर विषयों तथा क्षेत्रों को ध्यान में रखा गया है । जिन पर अध्यापकों के मतों में भिन्नता आने की सम्भावनाएं अधिक रहती हैं । अध्यापकों के अभिमतों को उनके प्रशिक्षण में पर्याप्त स्थान मिलना ही

चाहिए ताकि अभिमतों को समूह विचार मंथन के दौरान सही दिशा निर्देश दिए जा सकें। अभिमतावली में परीक्षण की वैधता सम्बन्धी प्रमुख गुण इस प्रकार हैं ।

1. 0;kidrk % इस क्षेत्र में कथनों की संख्या 40 है जो कि बाल अधिकार के 12 क्षेत्रों से है । इनमें अधिकांश कथन ऐसे है जिन पर अध्यापकों में मत भिन्नता होने की सम्भावना रहती है। तीन क्षेत्रों 1. लिंगानुपात 2. बालकों का स्वास्थ्य तथा 3. समता एवं समानता पर अध्यापकों द्वारा दी जाने वाली प्राथमिकताओं का अध्ययन किया जाना आवश्यक प्रतीत हो रहा है ।

2.0/kkrk % जो गुण कथनों /प्रश्नों में तत्परता के सम्बन्ध में दिए गये हैं वे सब यहां भी लागू हैं ।

3. fo'oluh;rk % किसी मापनी की विश्वसनीयता सिद्ध करने के लिए एक ही प्रश्न को या आने वाले उत्तरों को एक से अधिक बार लिख कर उनके उत्तरों का परीक्षण किया जाता है। हमारी मापनी में तत्परता का अध्ययन करने के लिए हमने तीन प्रश्नों को एक से अधिक स्थान पर रखा है ये तीन प्रश्न इस प्रकार हैं –

8. बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार के सम्बन्ध में यदि आपको निःशुल्क पत्राचार प्रशिक्षण दिया जाए तो आप उसमें प्रवेश लेने के लिए उत्सुक रहेंगे ।

1 उत्सुक हैं ।

2. हम पहले से ही जानकार है।

3. यह सब कुछ बेकार की बातें हैं ।

9 बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार का पत्राचार कार्यक्रम कितनी समयावधि का होना ठीक रहेगा ।

1. एक वर्षीय कार्यक्रम

2. दो वर्षीय कार्यक्रम

3. आवश्यकता ही नहीं है ।

10 .शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में बाल विकास तथा बाल अधिकार पाठ्यक्रम को लागू करने में आपकी सलाह के अनुसार

1. यह पाठ्यक्रम आवश्यक विषय के रूप में होना चाहिए ।
2. केवल इच्छुक प्रशिक्षणार्थी के लिए ही यह विषय हो ।
3. आवश्यकता ही नहीं है ।

इन प्रश्नों के विकल्प तीन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों की आवृत्तियां क्रमशः 11, 10 तथा 9 आयी है। जो कि समस्त उत्तरों का क्रमशः 2.1, 1.92 व 1.73 प्रतिशत है । सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधानों में यह प्रतिशत का अंतर विशेष महत्वूपर्ण नहीं माना जाता, इस निर्वचन से अभिमत मापनी की विश्वसनीयता सिद्ध होती है ।

संदर्भ ग्रंथ

अरिमपूर, जॉय (1992) : स्ट्रीट चिल्ड्रन ऑफ मद्रास–ए सिचुएशनल एनालिसिस, बास्को इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क, नोएडा, वी.वी. गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान, 78 पृष्ठ।

एसोशिएसन फॉर डेवलपमेंट (2002) : न्यू दिल्ली ए–स्टडी ऑन दि प्रोब्लम्स ऑफ स्ट्रीट एण्ड वर्किंग चिल्ड्रन लिविंग एट रेलवे स्टेशन इन दिल्ली, नई दिल्ली

Balakrishanan, R (1994): The Sociological Context of Girls' Schooling: Micro Perspectives from Delhi Slums in Social Action, 44 (July-September) 1994.

Balasbramarian, R. (Ed.) 1992 : Tolerance in Indian Culture New Delhi. Indian Philosophical Research.

Basu , D.D. (2003) : Human Right in constitutional Law New Delhi Law Publishers, II Edition.

Bee, H. (1978) : The Developing Child, New York : Harper & Row Publishers.

Best, John W. (1986) : Research in Education, New Delhi Prentice Hall.

Beckett,Chris(2007): Child Protection-an Introduction. New Delhi SAGE Publications. www.sagepublication.com.

Bhagia, N.M. (1980) : Promoting Attitudes and Values through Environmental Studies. Naya Shikshak, Rajasthan Bikaner, 23 (2), 9-21.

Bhargava, R. (1998): Secularism and its cities, New Delhi, Oxford University, Press.

Bhaskara, R.D. (1997) : Scientific attitude, New Delhi, Discovery Publishing House.Education, 25-26(4-1), 39-43.

Black, M (1994) : Children First: The Story of UNICEF, Past and Present, Oxford University Press.

Chaudhary, M. & Kaur, P. (1997) : Impact of Home Environment on moral Values of children. Indian Educational Abstract (Full article in Praachi Jour. of Psycho-cultural Dimensions, 9(1), 39-43)

CRY(2001):The Indian Child,2001.Child Relief and You,Mumbai,189/A Sane Guruji Marg Anand Estate.(www.cry.org.)

Dhanda, V. & Nath, M. (1994) : Prachi Jour. of Psycho-Cultural Dimentions vol. 10C 1 , 1981.

Edword, Landon (1991) : Encyclopedia of Human Rights, London Francis Inc.

Ebrahim,G. J,(1985) :Social and Community Pediatrics in developing Countries Caring for the Rural and Urban Poor Macmillan.

Ehlers, H. (1977) : Crucial Issues in Education, New York : Holt, Rinehart and Winston.

Gangani Rajesh (2006): Status of Children in India .New Delhi Cyber Tech Publication.

Garret, E. Henry (2004) : Statistics in Psychology & Education. New Delhi, Paragon International Publishers, Dariyaganj.

Geetha,C.V& Bhaskar,G (1993) :Education for human rights and democracy. Simla,Indian Institute of Advance Studies, Workshop.

Giri,K (1995):Safe Motherhood Strategies in the Developing Countries in H M Wallace, Giri, K and Serrano, C V (eds) Health Care of Women and Children in Developing Countries, Oakland C A: Third Party Publishing Company .

Goldbrick, D.M. (1991) : Human Rights, its Role in development of International conversant on Civil & Political Rights. Oxford Uni.

Govt. of India :

: Report of committee on Emotional Integration, Ministry of education, 1962.

: Report of the committee for review of National policy of education 1986, 1990.

: Report of the committee on Religious and Moral. Instruction. Ministry of Education. 1959.

: Report of the Education commission on education and National Development 1964-66. Ministry of education. 1966.

: Report of the National Policy on education (1986) Ministry of Human Resource Dev.

: The Pre Conception and Pre Natal Diagnosis Techniques (Prohibition of Sex Selection) ACT No 57 of 1994 Amendment vide 14 of 2003.Dated 14-2-2003.

: The Pre Diagnostic Technique (Regulation & Prevention of misuse) Rule 1996 Amended vide G S R 109 (E) dated 14-2-2003.

: National Trust for Welfare of Persons with Autism Cerebral Palsy, Mental Retardation and Multiple Disabilities Act 1999.Act 44 of 1999. Published in Gazette of India Part II Sec E extra ordinary dated 30-12-1999.

: Juvenile Justice(Care &Protection of children) Amendment Act,2006 notified in the Gazette of India on 23rd August 2006.

: Child Protection-A Hand book for teachers Ministry of women and child development.2006.

: Annual Report- 2007-2008 Ministry of women and child development..

: National Guidelines on Infant & Young Child Feeding .Ministry Of Women &Child Deployment & Food and Nutrition Board